Bhajan

10

राम मुझे मधुर मिलन मिले तेरा

राम मुझे मधुर मिलन मिले तेरा ॥

मन मुख माया मुख बन मोही,
भरम में भटका बहुतेरा ॥१॥

अशरण-शरण की चरण शरण में,
निश दिन बने बसेरा ॥२॥

गाऊँ मैं राम राम मधुर धुन,
सब दिन सांझ सबेरा ॥३॥

तेरे मेल में मिल हो जायें,
'मैं' तेरा 'तू' मेरा ॥४॥

धुन-- जय जय राम
जय सिया राम

सांचा नाम तेरा, तू ही एक सहारा

सांचा नाम तेरा, तू ही एक सहारा,
मेरे राम तेरा नाम, जपूँ मैं सुबह शाम ॥

जब से मन में तुम्हें बसाया,
निर्मल हो गई मेरी काया ।
धन्य हो गया जीवन मेरा,
तुझको पाकर राम ॥

मन में ज्ञान की जोत जगाना,
सत्य की राह में मुझे चलाना ।
जन की सेवा धर्म हो मेरा,
कर्म करूँ निष्काम ॥

प्राण मेरे जब तन से निकलें,
नाम तेरा ही मुख से निकले ।
यही अभिलाषा है बस मेरी,
पूरी करना राम ॥

हे दयामय दीनबन्धु

हे दयामय दीनबन्धु, दीन को अपनाईये ।
डूबता बेड़ा मेरा, मझधार पार लँघाइये ॥

नाथ तुम तो पतितपावन, मैं पतित सबसे बड़ा ।
कीजिये पावन मुझे, मैं शरण में हूँ आ पड़ा ॥

तुम गरीबनवाज हो, ये जग सारा कह रहा ।
मैं गरीब अनाथ हूँ, नित दुःखप्रवाह में बह रहा ॥

इस गरीबी से छुड़ाकर, कीजिये मुझको सनाथ ।
तुमको पाकर नाथ मैं, फिर क्यूँ कहाऊँ मैं अनाथ ॥

अब नहीं ऐसा उचित, प्रभु कृपा मुझपर कीजिये ।
पापका बन्धन छुड़ा नित-शांति मुझको दीजिये ॥

तेरा साथी राम

तेरा साथी राम मनवा क्यों घबराए रे ।

पल भर भी तु नहीं अकेला,
पग-पग तेरा राम सहेला,
वे हैं तो कुछ नहीं दुहेला,
निशदिन आठों याम, मनवा क्यों घबराए रे ॥

अंग संग नित पास है तेरे,
घट में ही तो वास है तेरे,
निकट कि सांस-सांस है तेरे,
आनन्द कन्द घनश्याम, मनवा क्यों घबराए रे ॥

प्रीत न कोई अंत निभाए,
एक राम एक संत निभाए,
बाकी दुनिया आए-जाए,
अविचल आंचल थाम, मनवा क्यों घबराए रे ॥

दुख सुख आता है जाता है,
राम विमुख ही विचलाता है,
पर 'निर्दोष' न घबराता है,
सब तज भज हरिनाम, मनवा क्यों घबराए रे ॥

गुरुदेव दया करके

गुरुदेव दया करके मुझको अपनालेना ।
मैं शरण पड़ा तेरी चरणों में जगह देना ॥

करुणानिधि नाम तेरा, करुणा दिखलाओ तुम,
सोये हुए भाग्यों को, हे नाथ जगाओ तुम,
मेरी नाव भंवर डोले, उसे पार लगा देना ॥
गुरुदेव दया करके ...

तुम सुख के सागर हो, निर्धन के सहारे हो,
मेरे मन में समाए हो, मुझे प्राणों से प्यारे हो,
नित माला जपूं तेरी, नहीं दिल से भुला देना ॥
गुरुदेव दया करके ...

पापी हूँ या कपटी हूँ, जैसा भी हूँ तेरा हूँ,
घरबार छोड़कर मैं, जीवन से खेला हूँ,
दुख का मारा हूँ मैं, मेरे दुखड़े मिटा देना ॥
गुरुदेव दया करके ...

मैं तेरा सेवक हूँ, चरणों का चेरा हूँ,
नहीं तात भुला मुझको, इस जग में अकेला हूँ,
तेरे दर का भिखारी हूँ, मेरे दोष मिटा देना ॥
गुरुदेव दया करके ...

जिसे देखता हुँ, वही रूप तेरा

जिसे देखता हूँ, वही रूप तेरा,
कि हरएक में तू समाया हुआ है ॥

ये दुनिया है तेरे ही हाथों का जादू,
ये कांटे नुकीले, ये फूलों में खुशबू,
सुखी जन का हँसना, दुःखी मन के आँसू,
ग़ज़ब राम नक्शा बनाया हुआ है ॥
जिसे देखता हूँ ...

कहीं पे तू धनवान बन, राज भोगे,
कहीं दीन मोहताज़ है चीथड़ों के,
कहीं बिक रहा मोल तू कौड़ियों के,
कहीं लाख साधन से पाया हुआ है ॥
जिसे देखता हूँ ...

कहीं पे तू माँ बाप भाई है भगवन,
कहीं पे पति पत्नी प्यारों के बन्धन,
कहीं दोस्त है तू, कहीं जानी दुश्मन,
ज़हर और अमृत मिलाया हुआ है ॥
जिसे देखता हूँ ...

कहीं पे बुढ़ापा, लड़कपन जवानी,
हज़ारों शक़ल में तू है ज़िन्दगानी,
ये 'निर्दोष' तेरी अमर है कहानी,
कहीं अंत तेरा न आया हुआ है ॥
जिसे देखता हूँ ...

मेरी बाँह पकड़ लो एक बार

मेरी बाँह पकड़ लो एक बार,
    प्रभु एक बार, बस एक बार ।

यह जग अति गहरा सागर है,
मेरे सिर पापों की गागर है।
    कुछ हल्का कर दो भार,
    प्रभु एक बार, बस एक बार ॥

एक जाल बिछा मोह माया का,
एक धोखा कंचन-काया का ।
    मेरा कर दो मुक्त विचार,
    प्रभु एक बार, बस एक बार ॥

है कठिन डगर, मुश्किल चलना,
बल हीन को बल दे दो अपना ।
    कर जाऊँ भव भय पार,
    प्रभु एक बार, बस एक बार ॥

मैं हार गया अपने बल से,
'निर्दोष' बचाओ जग-छल से ।
    सौ बार नहीं बस एक बार,
    प्रभु एक बार, बस एक बार ॥

न खो विश्वास न मन को हार

न खो विश्वास न मन को हार,
मिलेगा अवश्य प्रभु का प्यार,
प्रभु बड़ा दयालु है, प्रभु बड़ा दयालु है ।

कितनी ही भूलें हों तेरी कितना ही हो पाप,
सच्चे मन से क्षमा माँग ले, कर ले पश्चाताप,
सौंप दे नौका की पतवार,
करेगा खुद ही परले पार,
प्रभु बड़ा दयालु है, प्रभु बड़ा दयालु है ॥

कितना ही तू दीन हीन रे, कितना दुखी निराश,
दाता घूमे नगरी-नगरी, बाँट रहा विश्वास,
मांग ले जितना है दरकार,
भरा है दाता का भण्डार,
प्रभु बड़ा दयालु है, प्रभु बड़ा दयालु है ॥

कौड़ी तेरे पास नहीं है, है तू खाली हाथ,
भोला बन, मन राम सुमर ले - राखे दीनानाथ,
खुला रहता है उसका द्वार,
करेगा ज्यों का त्यों स्वीकार,
प्रभु बड़ा दयालु है, प्रभु बड़ा दयालु है ॥

धुन -- वन्दे रामं सच्चिदानन्दं